# पैग़म्बरे इस्लाम (स0) की
# पैदाइश और वफ़ात की तारीख़

बिन्ते ज़हरा नक़वी 'नदल हिन्दी' साहेबा

अफ़सोस कि दुनिया के मुसलमान और तो और रसूले इस्लाम (स0) ही की पैदाइश और वफ़ात की तारीख़ में इख़्तेलाफ का शिकार हैं, परेशानियाँ पिछले ज़माने के तारीख़ लिखने वालों की तहरीरों की वजह से है। ज़रूरत है कि जिन तारीखों पर इमामिया मज़हब का इत्तेफ़ाक़ है उन्हें इमामिया फ़ुक़्हा व मुहक़्क़ीन और अहलेसुन्नत के उलमा की किताबों से पेश किया जाए चुनाँनचे यह छोटा सा मज़मून इसी वजह से क़ाग़ज के हवाले किया जा रहा है।

## पैदाइश

अनुवाद– उम्दतुल मुहद्दिसीन मुल्ला मुहम्मद याक़ूब कुलैनी (रह0) ने किताब काफ़ी में लिखा है कि सैय्यिदुल मुरसलीन हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा (स0) की मुबारक पैदाइश सन् 1 आमुलफ़ील (जिस साल अब्रहा काबा को ढाने के लिए हाथियों के लश्कर लेकर गया था) 12 रबीउल औव्वल जुमे के दिन ज़वाल के वक़्त हुई और शैख़ अबूजाफ़र तूसी (रह0) अपनी कुछ किताबों में और शहीदे औव्वल (रह0) दुरूस में लिखते हैं कि आंहज़रत 17 रबीउल औव्वल को जुमा के दिन, फज्र के वक़्त पैदा हुए।

मौलाना नवाब शैख़ अहमद हुसैन ख़ाँ 'मज़ाक़' अपनी क़ीमती किताब ''तारीख़े अहमदी'' में लिखते हैं कि ''तारीख़ुल ख़मीस'' में है कि रसूले मक़बूल 10वीं रबीउल औव्वल को और एक क़ौल के हिसाब से 12वीं रबीउल औव्वल और एक रिवायत के हिसाब से 17वीं रबीउल औव्वल को पैदा हुए।''

हक़ीक़ी तारीख़ लिखने वाले सैय्यिदुल उलमा आयतुल्लाहिल उज़मा सैय्यिद अली नक़ी नक़वी अपनी किताब ''तारीख़े इस्लाम'' के पहले भाग में पेज 60–61 पर लिखते हैं कि जब रसूल (स0) की वफ़ात की तारीख़ मुसलमानों में एक न रह सकी तो पैदाइश की तारीख़ में अलगाव होना कोई ताज्जुब की बात नहीं, ग़नीमत यह है कि महीना एक ही है यानी रबीउल औव्वल मगर इस महीने में किस दिन पैदा हुए इस बारे में अहलेसुन्नत में कई क़ौल हैं, दूसरी, आठवीं, दसवीं और ज़्यादा मश्हूर 12वीं तारीख़ है और पीर का दिन। इमामिया आलिमों में कुलैनी (रह0) भी 12वीं को कहते हैं लेकिन ज़्यादातर शीआ आलिम 17 रबीउल औव्वल को जुमे के दिन पैदाइश मानते हैं चूँकि इस फिरक़े का दारो मदार रसूल (स0) के अहलेबैत

पर रहा है इसलिए उनका इस तारीख़ पर तक़रीबन एक होना इसका पता देता है कि अहलेबैत से उनको यही इल्म हासिल हुआ था और ज़ाहिर है कि घर की बात में घर वालों से ज़्यादा किसका बयान सही समझा जा सकता है। अल्लामा इब्ने शहरे आशोब का बयान है कि उस वक़्त हाथी वालों के वाक़ये के बाद 55 दिन गुज़रे थे लेकिन मसूदी 50 लिखते हैं।

''रह्नुमायाने इस्लाम'' (चौदह मासूमीनों का बयान) में सैय्यिदुल उलमा लिखते हैं कि 570 ई0 में जिस साल अब्रहा हबशी ने ख़ान–ए–काबा पर हाथियों की फौज के साथ चढ़ाई की है जिसे अरबों ने आमुलफ़ील के नाम से साल बना लिया उसी साल जुमे के दिन 17 रबीउल औव्वल को हिजाज़ की ज़मीन मक्का पर हज़रत (स0) की पैदाइश हुई।

## वफ़ात

अनुवाद– शैख़ अबुजाफ़र तूसी (रह0) ने 'तहज़ीब' में लिखा है कि दूसरी रबीउल औव्वल को पीर के दिन ज़वाल के वक़्त मुनाफिक़ों के दिये हुए ज़हर की वजह से रसूल (स0) हमेशा के लिए जन्नत की तरफ़ चले गये।

''तारीख़े अह्मदी'' में तअल्लुक़दार परयाँवाँ नवाब अहमद हुसैन साहब लिखते हैं कि ''तबक़ात इब्ने साद'' में मुहम्मद बिन क़ैस से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (स0) की वफ़ात पीर के दिन दूसरी रबीउल औव्वल 11 हि0 को हुई और हज़रत आयशा से रिवायत है कि आँहज़रत ने पीर के दिन 12वीं रबीउल औव्वल को वफ़ात पाई।''

सरकार सैय्यिदुल उलमा ताबा सराह तारीख़े इस्लाम भाग–4 के पेज–178 पर लिखते हैं कि ''हज़रत (स0) की वफ़ात हमारे यहाँ की मश्हूर रिवायत के हिसाब से 28 सफर 11 हि0 को हुई और आम तौर पर अहलेसुन्नत 12 रबीउल औव्वल को मानते हैं, हमारे पुराने आलिमों में जनाब कुलैनी (काफ़ी के लेखक) ने भी इसी को माना है और इशारों के हिसाब से मेरे नज़दीक मज़बूत क़ौल यह है कि 2 रबीउल औव्वल को वफ़ात हुई है। और ''रह्नुमायाने इस्लाम'' में पेज 33–34 पर सैय्यिदुल उलमा लिखते हैं कि पीर का दिन दूसरी रबीउल औव्वल या एक क़ौल की बुनियाद पर 28 सफर की वह क़यामत वाली तारीख़ थी जब कुछ दिन बीमार रहने के बाद मुस्लेहे आलम, पैग़म्बरे इस्लाम हज़रत मुहम्मद मुस्तफा (स0) ने दुनिया से इन्तेक़ाल किया। आपकी वसीयत के मुताबिक़ आपके भाई और जानशीन हज़रत अली बिन अबी तालिब (अ0) ने आपका कफ़न–दफ़न किया और आपकी मस्जिद के पास उसी हुजरे में जहाँ आपकी वफ़ात हुई थी दफ़न किया।

मदीना–ए–मुनव्वरा में आपका रौज़ा दुनिया के मुसलमानों की ज़ियारतगाह है जहाँ वह मक्का–ए–मुअज़्ज़मा के हज से पहले या बाद में जाते हैं और नबी की मस्जिद और रौज़े की ज़ियारत का शरफ़ हासिल करते है।

